भयभीत होकर दिशाओं में भाग रहे हैं। यह सब योग्य ही है।।३६।।

तात्पर्य

कुरुक्षेत्र-युद्ध के परिणाम के सम्बन्ध में श्रीकृष्ण के वचन को सुनकर भक्त अर्जुन प्रबुद्ध हो गया। उसने स्वीकार किया कि श्रीकृष्ण जो कुछ करते हैं, वह सब योग्य है। वह मान रहा है कि श्रीकृष्ण भक्तों के पालनकर्ता और आराध्य हैं तथा दुष्टों का विनाश करने वाले हैं। उनकी क्रिया सभी के लिये समान रूप से कल्याणकारी है। अर्जुन जानता है कि कुरुक्षेत्र के युद्ध में भगवान् श्रीकृष्ण की उपस्थिति के कारण अनेक देवता, सिद्ध तथा उच्चलोकों के निवासी आकाश से उस युद्ध का निरीक्षण कर रहे हैं। जब उसे प्रभु के विश्वरूप का दर्शन हुआ तो देवता प्रसन्न हुए, परन्तु असुर और अनीश्वरवादी श्रीभगवान् के संकीर्तन को सहन नहीं कर सके। असुरों को श्रीभगवान् के उस प्रलयकारी रूप से स्वभावतः बड़ा भय होता है, इसलिए वे पलायन कर गये। अर्जुन ने भक्तों और नास्तिकों से यथायोग्य व्यवहार करने के लिए श्रीकृष्ण की स्तुति की। भक्त सब अवस्थाओं में श्रीकृष्ण का जयजयकार करता है। वह जानता है कि वे जो भी क्रिया करते हैं, उसमें प्राणीमात्र का कल्याण है।

कस्माच्च ते न नमेरन्महात्मन्
गरीयसे ब्रह्मणोऽप्यादिकर्त्रे।
अनन्त देवेश जगन्निवास
त्वमक्षरं सदसत्तत्परं यत्।।३७।।

कस्मात्=कैसे; **च**=तथा; **ते**=आपके लिये; **न**=नहीं; **नमेरन्**=प्रणाम करें; **महात्मन्**=हे महापुरुष; **गरीयसे**=बड़े हैं; **ब्रह्मणः**=ब्रह्मा से; **अपि**=भी; **आदिकर्त्रे**=आदिकर्ता; **अनन्त**=हे अनन्त; **देवेश**=हे देवों के प्रभु; **जगन्निवास**=हे जगत् के आश्रय; **त्वम्**=आप ही हैं; **अक्षरम्**=अविनाशी; **सत्-असत्**=कार्य-कारण; **तत् परम्**=माया से परे; **यत्**=जो।

अनुवाद

हे महात्मन् ! आप ब्रह्मा के भी बड़े आदिकर्ता हैं। वे आपको नमस्कार कैसे न करें। क्योंकि हे अनन्त ! हे जगन्निवास ! आप ही तो सब कारणों के कारण और इस जगत् से परे परम अक्षर हैं।।३७।।

तात्पर्य

अर्जुन के इस प्रकार अभिवादन करने से स्पष्ट है कि श्रीकृष्ण सब के आराध्य, सर्वव्यापी और परम-आत्मा हैं। अर्जुन ने यहाँ श्रीकृष्ण को **महात्मा** सम्बोधित किया, जिसका अर्थ है कि श्रीकृष्ण सर्वाधिक उदार और निरवधि हैं; **अनन्त** हैं, अर्थात् संसार में ऐसा कुछ नहीं है जो श्रीभगवान् की शक्ति और प्रभाव के अन्तर्गत न हो। **देवेश** शब्द का तात्पर्य है कि वे सब देवताओं के नियन्ता हैं,